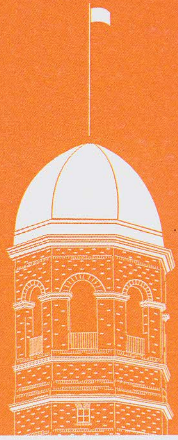

डा० सुरेश चन्द्र गैरोला

कुलाधिपति, वन अनुसंधान संस्थान सम विश्वविद्यालय
एवं महानिदेशक, भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा
परिषद, देहरादून
का संबोधन

माननीय मंत्री, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन, भारत सरकार, डॉ0 हर्षवर्धन जी, श्री ए.एन. झा., सचिव, पर्यावरण वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार, श्री सिद्धान्ता दास, वन महानिदेशक एवं विशेष सचिव, पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय भारत सरकार, डॉ. सविता, निदेशक, वन अनुसंधान संस्थान एवं कुलपति वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालयः वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय के प्रबन्धन एवं शैक्षणिक परिषद के बोर्ड के विद्वान सदस्य, संकाय सदस्य, सिस्टर ऑर्गेनाइजेशन के प्रमुख, माननीय अतिथिगण, विद्यार्थियों, देवियों एवं सज्जनों तथा प्रिंट मीडिया के सदस्यगण। मेरे विचार से यह एक विशेष अवसर है कि वन अनुसंधान संस्थान विश्वविद्यालय का यह दीक्षांत समारोह हमारे माननीय मंत्री जी की उपस्थिति में आयोजित किया जा रहा है जो नवीकरण के जरिए ज्ञान की वृद्धि हेतु हमारे सभी प्रयासों में अमूल्य सहयोग दे रहे हैं। इस दीक्षांत समारोह में उनकी महान उपस्थिति हम सभी के लिए एवं हमारे विद्यार्थियो के लिए गर्व एवं सम्मान की बात है।

जैसा कि आप जानते है कि एफ.आर. आई. को सम विश्वविद्यालय का दर्जा वर्ष 1991 में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा वानिकी एवं पर्यावरण के विभिन्न पहलुओं को समाहित करते हुए शिक्षा प्रदान करने के उद्देश्य के साथ प्रदान किया गया तथा इसके साथ ही साथ ज्ञान एवं उपरोक्त सभी के विकास एवं प्रसार हेतु सहयोग प्रदान करने एवं देश के सामान्य जन के मध्य वन एवं पर्यावरण के बारे में जागरूकता उत्पन्न करने हेतु यह मान्यता दी गई। कुछ दशकों की अल्पावधि में एफ.आर.आई. विश्वविद्यालय वानिकी के क्षेत्र में अनुसंधान एवं वैज्ञानिक तथा तकनीकी के महान लक्ष्यों के रूप में अपने आप की पहचान कराने हेतु अभूत पूर्व ढंग से उन्नत हुआ है।

यह विश्वविद्यालय इस बात में अद्वितीय है कि एफ.आर.आई. में कार्य कर रहे वैज्ञानिक जो वानिकी के विभिन्न विषयों में विशेषज्ञ हैं साथ ही वन अधिकारी जो अपने क्षेत्र अनुभवों को साझा कर प्रायोगिक वानिकी में प्रशिक्षण देते है, इसके संकायों में समाहित होते है। हमारे संकाय सदस्य अध्यापन एवं शोध की प्रक्रिया में कौशल बढ़ाने हेतु प्रयासों पर विशेष ध्यान देते है।

देश में विकास की तीव्र गति ने लोगों की आशाओं के अनुरूप जागरूकता बढ़ाई है। उच्च शिक्षा के संस्थान अवसरों की समानता प्रदान करने में सहायक है जिससे प्रजातंत्र में महत्वपूर्ण सहभागिता होती है। यह न केवल पिछड़े क्षेत्रों से ध्यान को हटाता है अपितु इन क्षेत्रों से पलायन को भी रोकता है। इस संदर्भ मे मुझे यह कहते हुए खुशी है कि भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद ने भारत में वानिकी के पुर्नमहत्वीकरण के क्षेत्र मे महत्वपूर्ण कदम उठाए है। इसमें एम.एस.सी. वानिकी के लिए मॉडल पाठ्यक्रम तैयार किए गए है तथा विविध कृषि एवं वानिकी विश्वविद्यालयों को उनके विश्वविद्यालयों में स्नातकोत्तर डिग्री चलाने हेतु बुनियादी सुविधाएँ उन्नत करने के लिए वित्तीय सहायता प्रदान कर रहा है।

भारत में स्नातक एवं स्नातकोत्तर स्तर पर 26 राज्यों के कृषि विश्वविद्यालयों में वानिकी पढ़ाई जाती है। उच्च संस्थानीय गुणवत्ता एवं स्तर सुनिश्चित करने हेतु शिक्षा निदेशालय भा.वा.अ.शि.प. ने ऐसे विश्वविद्यालयों का प्रमाणीकरण अपने हाथों में लिया है। भारतीय वानिकी अनुसंधान एवं शिक्षा परिषद वानिकी में पी.एच.डी. प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों के लिए क्षात्रवृत्ति उपलब्ध कराने की भी योजना बना रहा है इस संदर्भ में भारत सरकार को आवश्यक वित्तीय सहायता हेतु एक प्रस्ताव भी भेजा जाएगा। इसके अतिरिक्ति वानिकी पाठ्यक्रमों में शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की रोजगार क्षमता बढ़ाने के नजरिए से एवं उन्हें उच्च श्शैक्षणिक उपलब्धियों तथा अनुसंधान से संबधित कार्यकलापों, वानिकी पाठ्यक्रमों के दोहराने एवं उन्नत करने के लिए वानिकी क्षेत्र में अत्याधुनिक विचारधारा सहित तीव्र गति से समय–समय पर यह कार्य किया जाना है।

मैं समझ सकता हूँ कि एक उचित रोजगार प्राप्त करने में वानिकी डिग्री धारकों के लिए कठिनाइयां हैं जैसा कि बहुत से राज्यों में राज्य वन विभागों में वानिकी डिग्री धारकों हेतु वन अधिकारियों की भर्ती में कोई आरक्षण नहीं है। और यह भी पता चलता है कि वानिकी ग्रेजुएट को अन्य ग्रेजुएट, विशेष रूप से राज्य/संघ लोक सेवा परीक्षा में प्रतियोगिता करने में कठिनाइयां आती हैं

जैसा कि वानिकी विषय को एक वैकल्पिक विषय के रूप में नही जोड़ा गया हैं। भारत सरकार के साथ इन कठिनाइयों के समाधान हेतु सहायता के लिए प्रयास किए जा रहे हैं।

प्रिय विद्यार्थियों आप जानतें है कि पर्यावरण का संकट इन वर्षो में अत्यधिक तीव्र गति से बढ़ा है। हम सबका यह उत्तरदायित्व है कि हम अपनी धरती को अपने रहने तथा भावी पीढ़ी के जीवन हेतु स्वच्छ एवं सुरक्षित स्थान बनाएँ। लेकिन पर्यावरणीय संसाधनों के अत्यधिक दोहन से हमने पारिस्थितिकी सन्तुलन बिगाड़ दिया है। लकड़ी का अत्यधिक कटान एवं उपयोग, योजना रहित शहरी विकास, अपोषणीय औद्योगिक एवं तकनीकी विकास जैसे संकट ने संघर्ष को बढ़ाया है। हमारे लिए यह उचित है कि पर्यावरण के साथ सद्भाव से रहें न कि इसके साथ प्रयोग करें अथवा इसका अत्यधिक शोषण करें। हमें याद रखना चाहिए कि हमारे कार्य एवं क्रिया–कलाप प्रत्यक्ष या परोक्ष रूप से समस्त परितंत्र को प्रभावित करते है। वास्तव में पर्यावरण हमें पोषित करता है, हमारे जीवन की गुणवत्ता निश्चित रूप से हमारे पर्यावरण पर निर्भर करती है। इस विनाशकारी प्रतिक्रिया में हस्तक्षेप करना अनिवार्य है तथा वन संरक्षण की ओर मानव संसाधनों को भी गति देना जरूरी है। इस उद्देश्य हेतु एक प्रभावी रणनीति के तहत कई कोशिशें करनी है तथा इसमें सरकार एवं जनता को भी शामिल होना चाहिए। आज पुरस्कार एवं डिग्री प्राप्त कर रहे हमारे स्कॉलरों को वानिकी विज्ञान एवं प्रयोग के सभी पहलुओं में बेहतर प्राप्ति का उत्तरदायित्व अपने कंधों पर लेना हैं। उन्ही के कंधों पर वानिकी क्षेत्र का भविष्य देश सेवा के लिये निहित है। एफ.आर.आई. विश्वविद्यालय में आपके अध्ययन की पराकाष्ठा आपके लिए गर्व का क्षण है तथा इससे भी अधिक आपके माता– पिता, शिक्षक तथा जिन्होंने आपके जीवन को रूप देने में आपकी मदद की है। यात्रा यहां समाप्त नहीं होगी, यह तो मात्र श्शुरूआत है तथा रॉबर्ट फ्रौस्ट द्वारा लिखित पंक्तियां यहाँ याद करना उचित होगा कि " वन प्यारे है, घने एवं गहरे है। लेकिन मैने वादा किया है कि अपने जीवन पर्यन्त मीलों चलकर इन्हें बचाउंगा, संरक्षित रखूंगा"। मै अपनी ओर से विद्यार्थियों तथा संकाय विशेषज्ञों से मजबूत अनुसंधान योजनाओं को शुरू करने का अनुरोध करना चाहूँगा जो देश के बहुपक्षीय आवश्यकताओं की पूर्ति करें, जिससे की बहुत से क्षेत्रों मे समस्याओं के वैज्ञानिक रूप से समाधान हो सके। एक सबसे बड़े, सबसे युवा तथा सबसे शिक्षित पीढ़ी जो पहले कभी नही थी, के रूप में आप अपने पर्यावरण को नया रूप देने की स्थिति मे है। आप पहले पीढ़ी से कही अधिक बेहतर स्थिति मे है, जो प्रेरणाओं को उपलब्धियों में बदल सकते है। अंत मे, मैं आप सभी के उज्जवल एवं उत्साहित भविष्य की कामना करता हूँ। आप जो कर रहे हैं, उसे बेहतर करें। कृपया जो भी आप करें, अपनी अखण्डता से समझौता न करें।

जय हिन्द